पर्यावरण लेखांकन अनुसंधान का महत्व

सुप्रिया यादव
अतिथि विद्वान (वाणिज्य)
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

सारांश -

अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा निभाई गई भूमिका को समझने के लिए पर्यावरण लेखांकन एक महत्वपूर्ण उपकरण है। पर्यावरण लेखांकन एक ऐसा शब्द है, जिसका उपयोग प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग या कमी को शामिल करने के लिए, राष्ट्रीय लेखा प्रणाली के संसोधन को संदर्भित करता है। पर्यावरण लेखांकन आर्थिक संसाधनों के साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण और संसाधन क्षरण द्वारा लगाई गई लागतों के साथ प्राकृतिक संसाधनों के योगदान संबंधित आँकड़े प्रदान करता है। इस प्रकार पर्यावरण लेखांकन आर्थिक निर्णय लेने की सुविधा के लिए व्यावसायिक इकाई के पर्यावरणीय रूप से आंकड़ों के संचार को संदर्भित करता है। यद्यपि पर्यावरणीय लेखांकन की अवधारणा मानक लेखा पद्धतियों का न होना, निम्नस्तरीय मूल्यांकन तकनीक, दीर्घकालिक प्रक्रिया और उद्योगों से संबंधित विश्वसनीय आँकड़ों की कमी जैसी कुछ समस्याओं से ग्रसित है, परंतु फिर भी यह ''विकास'' के निष्पक्ष मूल्यांकन तक पहुँचने और पर्यावरणीय पारदर्शिता को बढ़ावा देने हेतु एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर रहा है।

मुख्य शब्द - पर्यावरण लेखांकन, लागत, संसाधन, मूल्यांकन, कम्पनी।

पर्यावरण लेखांकन के उद्देश्य - पर्यावरण में परिवर्तन न केवल पर्यावरण पर बल्कि अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर डालता है और यह एक सर्वविदित तथ्य है, कि अर्थव्यवस्था में बदलाव का किसी भी व्यवसाय में होने वाले परिवर्तनों पर सीधा असर पड़ता है। यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है, कि किसी देश का सकल घरेलू उत्पाद, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो सकता है। इसलिए यह व्यवसायों के लिए पारंपरिक आर्थिक लक्ष्यों के बीच संभावित 'क्विड प्रोक्वो' को समझने और प्रतिबंधित करने का सबसे अच्छा साधन है। यह नीतिगत मुद्दों के विश्लेषण के लिए उपलब्ध महत्वपूर्ण जानकारी को भी बढ़ाता है। खासकर जब जानकारी के महत्वपूर्ण भाग को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। पर्यावरण लेखांकन का उद्देश्य सकल घरेलू उत्पाद के उस हिस्से की पहचान करना है, जो आर्थिक विकास के नकारात्मक प्रभावों की क्षतिपूर्ति के लिए आवश्यक लागतों यानी रक्षात्मक व्यय को दर्शाता है। इसमें पर्यावरणीय लागतों और लाभों का मूल्यांकन किया जाता है। पर्यावरण लेखांकन मौद्रिक पर्यावरण खातों के साथ भौतिक संसाधन खातों की कड़ी स्थापित करता है, एवं पर्यावरणीय रूप से समायोजित उत्पाद और आय के संकेतक का विस्तृत मापन करता है।

पर्यावरण लेखांकन के प्रमुख चरण - किसी भी संस्था या संगठन की पर्यावरण के संदर्भ में गुणवत्ता का पता लगाने के लिए विभिन्न अध्ययनों के आधार पर छः चरणों की पहचान की गई है। इनका उपयोग करके किसी भी संस्था द्वारा पर्यावरणीय लेखांकन को सुचारू रूप से संपादित किया जा सकता है।

- पहचान : पर्यावरणीय लेखांकन प्रक्रिया में पहला कदम पर्यावरणीय रिपोर्टिंग करने वाले मापदंड की पहचान करना होता है प्रत्येक संगठन अपनी आवश्यकताओं के अनुसार पर्यावरणीय मापदंडों को परिभाषित करता है।
- वर्णन : पर्यावरणीय रिपोर्टिंग मापदंडों को परिभाषित करते समय पर्यावरणीय लेखांकन प्रक्रिया के दूसरे चरण में संगठनों को अपने द्वारा निर्धारित प्रत्येक घटक के परिचालन के अर्थ को स्पष्ट रूप से बताने की आवश्यकता होती है। यह चरण उन्हें दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रदर्शन को मापने में मदद करता है।
- विशिष्टता : अगला चरण पर्यावरणीय लक्ष्यों की पहचान करना होता है। संगठन द्वारा अल्पकालिक लक्ष्यों के साथ-साथ दीर्घकालिक पर्यावरणीय लक्ष्यों को भी निर्धारित किया जाना चाहिए।
- विकास : पर्यावरण का प्रदर्शन करने वाले संकेतकों का निर्माण करना, पर्यावरण लेखांकन में एक महत्वपूर्ण कदम होता है। इसके अंतर्गत पर्यावरण नीति की संरचना, अपनाए जाने वाले स्वास्थ्य और सुरक्षा मानक, लागू की जाने वाली ऊर्जा संरक्षण रणनीतियाँ, डिजाइन किए जाने वाले अपशिष्ट एवं जल प्रबंधन नीतियों को शामिल किया जाता है।
- मापन : पर्यावरण का प्रदर्शन करने वाले पारंपरिक संकेतकों के साथ-साथ वास्तविक पर्यावरणीय प्रदर्शन का मापन करना अत्यंत ही आवश्यक होता है। यह मापन प्रकृति में गुणात्मक अथवा मात्रात्मक हो सकता है।
- रिपोर्ट तैयार करना : पर्यावरणीय लेखांकन का अंतिम चरण पर्यावरणीय प्रदर्शन परिणाम के दस्तावेज को तैयार करना है।

औचित्य और महत्व -

- पर्यावरण लेखांकन, परंपरागत लेखांकन पद्धतियों से भिन्न होता है, जिनका सामान्यतः एक आयामी दृष्टिकोण होता है और केवल एक संगठन के वास्तविक प्रभावों का लाभ और हानि का लेखांकन विधियों के माध्यम से मापन करते हैं।
- पारिस्थितिकीय लेखांकन के विपरीत यह मौद्रिक रूप में एक कंपनी पर प्राकृतिक पर्यावरण के प्रभावों का आकलन करता है, जिसमें भौतिक माप में पर्यावरण पर प्रभाव का मापन किया जाता है।
- यह संदूषित स्थलों की साफ-सफाई या उपचार की लागत, पर्यावरण जुर्मानों, दंड, करों तथा प्रदूषण रोकथाम प्रौद्योगिकियों की खरीद एवं अपशिष्ट प्रबंधन लागत की जाँच करता है।

- यह पर्यावरण संबंधी जोखिम में परिवर्तित होने वाले गंभीर पर्यावरणीय विस्थापन और परिणामों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग करते समय यह उपभोक्ताओं व्यावसायिक साझेदारों, निवेशकों और कर्मचारियों जैसे हितधारकों के प्रति, संगठनों के उत्तरदायित्व को पूरा करने में सहायता करता है।

भारत में पर्यावरणीय लेखांकन की प्रगति -

- भारत में पर्यावरण लेखांकन की संकल्पना तथा इसके विधिक आयाम प्रगतिशील अवस्था में है। कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत कंपनियों को उनकी स्थिति और वित्तीय प्रदर्शन के साथ-साथ संसाधनों एवं पर्यावरणीय संरक्षण का समय-समय पर मूल्यांकन का प्रावधान किया गया है।
- वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में सुधार करने के लिए, कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय ने कंपनियों की सामाजिक, पर्यावरणीय, एवं आर्थिक जवाबदेही पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश (NVGs) जारी किये थे। राष्ट्रीय कंपनी स्वैच्छिक दिशानिर्देश के सिद्धांत 6 में इस बात पर जोर दिया गया कि 'सभी व्यावसायियों को' पर्यावरण के सम्मान तथा संरक्षण को समान महत्व प्रदान किया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय कंपनी स्वैच्छिक दिशा निर्देश 2011 के अनुसार, प्राकृतिक तथा मानव पूँजी का प्रयोग करके कचरे को एकत्रित करना, उसके नियंत्रक एंव पुनर्चक्रण के माध्यम से सामग्री के पुनः उपयोग को बनाए रखना चाहिए। एवं कंपनी को अपनी कार्यवाहियों के अंतर्गत प्रदूषण के निर्गमन को रोकने एवं नियंत्रित करने के प्रयास शामिल किए जाने चाहिए। इनके द्वारा समयबद्ध तरीके से पर्यावरणीय क्षति तथा लागत का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- संगठनों तथा कंपनियों को उनकी गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले पर्यावरणीय जोखिमों का समय-समय पर मूल्यांकन करने के साथ प्राप्त होने वाले निष्कर्षों का निष्पक्ष तौर पर हितधारकों के सामने प्रकट करना चाहिए।

पर्यावरण लेखांकन की चुनौतियाँ -

- कंपनियों द्वारा रिपोर्ट की गई अधिकांश पर्यावरणीय जानकारियाँ गैर वित्तीय रूप में दर्ज की जाती है। ऐंसी जानकारियाँ कंपनी द्वारा किए गए प्रयासों का विवरण मात्र होती हैं। जिन्हें पर्यावरण लेखांकन में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। अनेक मामलों में इस तरह की पहल के लिए खर्च की गई राशि और वित्तीय परिणामों पर इसके भौतिक प्रभाव की जानकारी पूरी तरह से गायब रहती है।
- लेखांकन करने के लिए चयनित की गई कंपनियों की लेखांकन शैली तथा विषयवस्तु में व्यापक भिन्नता पाई जाती है। तुलनात्मक अध्ययन तथा सत्यापन की कमी की समस्या लगभग सभी लेखांकन

प्रक्रियाओं में देखी जा सकती है। अतः यह महसूस किया जाता है, कि एक विश्वसनीय लेखांकन प्रक्रिया के लिए ऐसी जानकारी को वित्तीय लेखांकन प्रक्रिया के साथ स्वीकृत किया जाना चाहिए।

- आंतरिक तथा बाह्य लागतों के एकीकरण करने के संदर्भ में भी एक प्रमुख समस्या दृष्टिगत होती है। आंतरिक लागतों के अंतर्गत कॉरपोरेट क्षेत्र द्वारा विभिन्न चरणों में किया गया निवेश शामिल रहता है, तो वहीं दूसरी तरफ बाह्य लागतों के अंतर्गत मृदाक्षरण, जैवविविधता की हानि, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा ठोस कचरे की समस्या जैसे पहलुओं को शामिल किया जाता है। उपरोक्त दोनों के एकीकरण के लिए एक विशिष्ट मौद्रिक आकलन प्रक्रिया की आवश्यकता होगी। इसके आलावा, यह तय करना भी अत्यंत कठिन है कि एक विशिष्ट व्यावसायिक इकाई की स्थापना के कारण पर्यावरण को कितना नुकसान हुआ है। यह चुनौती मौजूदा पर्यावरणीय लेखांकन के ढ़ांचागत विकास में बाधक है।

निष्कर्ष - भारत में पर्यावरणीय लेखांकन की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए सरकार तथा व्यावसायिक घरानों को एक स्पष्ट तथा ठोस पर्यावरणीय लेखांकन नीति तैयार करनी होगी। आर्थिक प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होने वाले प्रदूषण के नियंत्रण के लिए पर्याप्त कदम उठाने के साथ-साथ इनका लेखांकन किया जाना तथा समयबद्ध रूप में प्रकाशित करना अत्यंत आवश्यक है। आर्थिक विकास तथा पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की माँग है अतः इनके मापन के लिए उचित कार्यान्वयन तथा एक स्पष्ट लेखांकन प्रक्रिया की आवश्यकता है।

सन्दर्भ -

1. स्वामी, संजय कुमार, पर्यावरण की चुनौतियाँ और भारतीय परम्परा, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2022
2. https://kredoz.com/environmental-accounting-or-green-accounting/
3. https://www.iasbook.com/hindi/prayavarn-lekhankan
4. "https://en-wikipedia-org/w/index.php
5. https://seea.un.org/ecosystem accounting